Daily Gospel Reflections in Hindi

02 November 2019

COMMEMORATION OF THE DEAD
EZEK 37:1-14; 2 MACC 12:38-45; 1 COR 15:51-58; JN 11:17-27

''एक ही मनुष्य द्वारा संसार में पाप का प्रवेश हुआ और पाप द्वारा मृत्यु का। इस प्रकार मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गयी, क्योंकि सब पापी हैं। (रोमियों 5:12)। आज भी बहुत सारे लोग इस दुनिया में मर जाते हैं। यह जाने बिना कि पाप ही उनको मारता है।'' शैतान की ईर्ष्या के कारण ही मृत्यु संसार में आयी है। जो लोग संसार का साथ देते है, वे अवश्य ही मृत्यु का शिकार हो जाते हैं। (प्रज्ञा 2:24)। ''शैतान तो प्रारंभ से हत्यारा था। उसने कभी सत्य का साथ नहीं दिया, क्योंकि उसमें कोई सत्य नहीं है'' (योहन 8:44)। बल्कि ईसा मसीह हमें जीवन देते हैं। इस जीवन में मृत्यु को कोई अधिकार की बात नहीं है।'' ईसा ने कहा पुनरुत्थान और जीवन मैं हूँ। जो मुझमें विश्वास करता है, वह मरने पर भी जीवित होगा और जो मुझमें विश्वास करते हुए जीता है, वह मरने पर भी जीवित रहेगा और जो मुझमें विश्वास करते हुए जीता है, वह कभी नहीं मरेगा'' (योहन 11:25–26)।

मृत्यु और जीवन प्रभु ईसा मसीह के अधिकार में है। सब विश्वासी जो ईसा मसीह में विश्वास किये हैं, वे मरने पर भी जीवित रहते हैं और आज हम विश्वासी जो विश्वास करते हुए जीते है, कभी नहीं मरेंगे। मृत्यु एक वास्तविकता या वह हालत है जिसमें हर मानव पूर्ण रूप से ईश्वर के प्रेम से वंचित होता है, या ईश्वर का प्रेम उसके जीवन में नष्ट होता है (उत्पत्ति 3:3) ''ईश्वर ने यह कहा, तुम उन्हें नहीं खाना। उनका स्पर्श तक नहीं करना, नहीं तो मर जाओगे।'' (लूकस 15:33) ''क्योंकि तुम्हारा यह भाई मर गया था और फिर जी गया है। यह खो गया था और फिर मिल गया है।'' एक पापी मनुष्य ''खोया हुआ'' है या शैतान द्वारा ईश्वर के हाथों से छीना हुआ है। पाप के कारण मानवों का शरीर ईश्वर के लिए मरा हुआ है। पाप के कारण अपने शरीर में मानव ने मृत्यु स्वीकार किया है। मृत्यु मे एक व्यक्ति स्वर्ग राज्य, ईश्वरीय जीवन और ईश्वर के प्रेम से जुडी हर बातों को खो देता है और नरक, अनन्त पीडा और शैतान से जुड़ी बातों को स्वीकार करता है। इसलिए शरीर का मृत्यु हमारा अंत नहीं है बल्कि ईश्वर के राज्य और उनके प्यार से दूर रहने का एक हालत है।

मृत्यु शारीरिक नहीं है बल्कि आत्मिक भी है। ईसा मसीह आत्मिक रूप से मरे लोगों को पूर्ण रूप से ठुकराते हुए कहते हैं ''ईश्वर मृतकों का नहीं जीवितों का ईश्वर है क्योंकि उसके लिए सभी जीवित है'' (लूकस 20:38)। ''तब राजा ने अपने सेवकों से कहा, ''इसके हाथ और पैर बाँध कर इसे बाहर, अंधकार में फेंक दो। वहां वे लोग रोयेंगे और दाँत पीसते रहेंगे (मत्ती 22:13)। शरीर का मृत्यु या निधन ईसा की दृष्टि में नींव मात्र है (मत्ती 9:24); (योहन 11:11) और प्रस्थान या गुजरना मात्र है (लूकस 9:31)। प्रेरितों के धर्मसार में जब हम ''एक कलीसिया'' को स्वीकार करते है तब हम यह भी स्वीकारते है कि हमसे अलग होकर या हमारे बीच में से गुजरकर स्वर्ग प्राप्त हुए सभी विश्वासी भाई बहन हमारे साथ जीवित है और हमारे साथ ईसा मसीह की इस ''एक कलीसिया'' में शामिल है।

ईश्वर ने सभी को जीवन प्रदान किया है। हमें मृत्यु की ओर नहीं बल्कि ईश्वर ने हमें जीवन की ओर बुलाया है। इसलिए पाप करते हुए और शैतान के वंश में आते हुए हम मृत्यु को स्वीकार नहीं करें बल्कि ईसा मसीह के खून में हमारे सभी पापों को धोकर हम अनन्त जीवन में प्रवेश करें और पुनरुत्थित होकर उनके स्वर्ग राज्य में शामिल हो जायें। जीवन ईश्वर का दान है, ईश्वर की आज्ञाओं के पालन से हम सब जीवित रहते हैं। मृत्यु, शैतान और उसके पक्षकारों और उसके संतानों का हक है जिससे उनको अनन्त यातना, पीड़ा और दर्द मिलता है। ईश्वर के जीवन में सहभागी होकर, ईश पिता को अब्बा पिता कहकर, सभी संतों के साथ शामिल होकर, ईसा मसीह के शरीर के एक–एक अंग बनकर हम सब हमारे भाई बहनों के साथ स्वर्ग राज्य में जीवित रहें। हमारे बीच से गुजरे सभी विश्वासी भाई बहनों की आत्माएँ को स्वर्ग राज्य मिलने के लिए हम प्रार्थना करें। आमेन।।

Rev. Fr. Siljo Kidangan

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019